
Shri Bhuvaneshwari Stotram

श्रीभुवनेश्वरीस्तोत्रम्

Document Information

Text title : Bhuvaneshvari Stotram 1

File name : bhuvaneshvarIstotram.itx

Category : devii, dashamahAvidyA, devI

Location : doc_devii

Proofread by : lalitha parameswari parameswari.lalitha at gmail.com, Ganesh Kandu, PSA
Easwaran

Description/comments : shAktapramodaH, rudrayAmala

Latest update : February 2, 2019

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

January 22, 2022

sanskritdocuments.org

Shri Bhuvaneshwari Stotram

श्रीभुवनेश्वरीस्तोत्रम्



अथानन्दमयी साक्षाच्छब्दब्रह्मस्वरूपिणीम् ।

ॐ सकलसम्पत्तयै जगत्कारणमम्बिकाम् ॥

विद्यामशेषजननीमरविन्दयोने- var आद्यामशेष

विष्णोः शिवस्य य वपुः प्रतिपाद्यित्रीम् ।

सृष्टिस्थितिक्षयकरीं जगतां त्रयाणां

स्तुत्वा गिरं विमलयाभ्युदमम्बिके त्वाम् ॥ १ ॥

पृथ्व्या जलेन शिषिना मरुताम्बरेण

डोत्रेन्दुना दिनकरेण य मूर्तिभाजः ।

देवस्य मन्मथरिपोरपि शक्तिमत्ता

हेतुस्त्वमेव भूलुपर्वतराजपुत्रि ॥ २ ॥

त्रिस्रोतसः सकलदेवसमर्चितायाः

वैशिष्ट्यकारणमवैमि तदेव मातः ।

त्वत्पादपङ्कजपरागपवित्रितासु

शम्भोजटासु सततं परिवर्तनं यत् ॥ ३ ॥

आनन्दयैतुमुद्दिनीमधिपः कलाना-

न्नाभ्यामिनः कमलिनीमथ नेतरां वा ।

अेकस्य मोहनविधौ परमेकमीष्टे

त्वं तु प्रपञ्चमभिनन्दयसि स्वदृष्ट्या ॥ ४ ॥

आद्याध्यशेषजगतान्नवयौवनासि

शैलाधिराजतनयाप्यतिकोमलासि ।

त्रय्याः प्रसूरपि तथा न समीक्षितासि

ध्येयासि गौरि मनसो न पथि स्थितासि ॥ ५ ॥

आसाधे जन्म मनुजेषु थिरादुरापं

तत्रापि पाटवमवाप्य निज्जेन्द्रियाणाम् ।
नाभ्यर्थयन्ति जगतां जनयित्रि ये त्वां
निःश्रेणिकाग्रमधिरुड्य पुनः पतन्ति ॥ ६ ॥

कर्पूरयूर्णालिमवारिविलोडितेन
ये यन्दनेन कुसुमैश्च सुजातगन्धैः ।
आराधयन्ति छि भवानि समुत्सुकास्त्वां
ते भ्रुवभ्रुवभ्रुवनाधिभ्रुवः प्रथन्ते ॥ ७ ॥

आविश्य मध्यपदवीं प्रथमे सरोज्जे
सुभा छि राजसदृशी विरयय्य विश्वम् ।
विद्युल्लतावलयविलम्बमुद्धन्ती
पद्मानि पञ्च विदलय्य समश्रुवाना ॥ ८ ॥

तन्निर्गतामृतसैरभिषिच्य गात्रं
मार्गोऽण तेन विलयं पुनरप्यवासा ।
येषां लुटि स्फुरसि जातु न ते भवेयु-
र्मातर्मलेश्वरकुटुम्बिनि गर्भभाजः ॥ ९ ॥

आलम्बिकुण्डलभरामभिरामवक्त्रा-
मापीवरस्तनतटी तनुवृत्तमध्याम् ।
चिन्ताक्षसूत्रकलशालिप्पिताढ्यउस्ता-
मावर्तयामि मनसा तव गौरि मूर्तिम् ॥ १० ॥

आस्थाय योगमविजित्य च वैरिषट्क-
माभध्य येन्द्रियगणं मनसि प्रसन्ने ।
पाशाङ्कुशाभयवराढ्यकरांशुवक्त्रा-
मालोकयन्ति भुवनेश्वरि योगिनस्त्वाम् ॥ ११ ॥

उत्तमडाटकनिभां करिभिश्चतुर्भि-
रावर्तितामृतघटैरभिषिच्यमाना ।
उस्तद्रयेन नलिने रुचिरे वलन्ती
पद्मापि साभयकरा भवसि त्वमेव ॥ १२ ॥

अष्टाभिरुग्रविधायुधवाङ्मिनीभि-
र्दूर्वाल्लरीभिरधिरुड्य मृगाधियासम् ।
दूर्वाल्लयुतिरमर्त्यविपक्षपक्षा-

त्र्यङ्कुर्वती त्वमसि देवि भवानि दुर्गे ॥ १३ ॥

आविर्निर्गद्यज्वशीकरशोभिवङ्ग्रां
गुञ्जाङ्गलेन परिकल्पितडारयष्टिम् ।
रत्नांशुकाभसितकान्तिमलङ्कृतां त्वा-
माधां पुलिन्तरुणीमसङ्कृन्नामि ॥ १४ ॥

उंसैर्गतिः क्वणितनूपुरदूरदृष्टे
मूर्तेरिवाप्तवयनैरनुगम्यमानौ ।
पद्माविवोर्द्ध्वमुपभृङ्गसुजातनालौ
श्रीकण्ठपत्नि शिरसैव दधे तवाङ्घ्रि ॥ १५ ॥

द्वाभ्यां समीक्षितुमनुत्सिमतेव दृग्भ्या-
मुत्पाद्यता त्रिनयनं वृषडेतनेन ।
सान्द्रानुरागभवनेन निरीक्ष्यमाणे
जङ्घे उभे अपि भवानि तवानतोऽस्मि ॥ १६ ॥

उरु स्मरामि जितउस्तिकरावलेपौ
स्थौल्येन मार्दवतया परिभूतरम्भौ ।
श्रोणीभरस्य सङ्गनौ परिकल्प्य दत्तौ
स्तम्भाविवाङ्गवयसा तव मध्यमेन ॥ १७ ॥

श्रोण्यौ स्तनौ च युगपत्प्रथयिष्यतोऽर्थै-
र्बाल्यात्परेण वयसा परिकृष्णसारः ।
रोमावलीविलसितेन विभाव्यमूर्ति-
र्मध्यं तव स्फुरतु मे लृट्यस्य मध्ये ॥ १८ ॥

सभ्यास्स्मरस्य उरनेत्रदुताशभीरो-
ल्वावयवारिभरितं नवयौवनेन ।
आपाद्य दत्तमिव पल्लवमप्रविष्टं
नाभिं कदापि तव देवि न विस्मरेयम् ॥ १९ ॥

ःशोऽपि गेडपिशुनं भसितं धधाने
काश्मीरकर्द्धममनु स्तनपङ्कजे ते ।
स्नानोत्थितस्य करिणः क्षणालक्षणेनौ
सिन्धूरितौ स्मरयतः समदस्य कुम्भौ ॥ २० ॥

कण्ठातिरिक्तगलदुग्धज्वलकान्तिधारा
 शोभौ भुञ्जौ निजरिपोर्मकरध्वजेन ।
 कण्ठग्रहाय रचितौ डिल दीर्घपाशौ
 मातर्मम स्मृतिपथं न विलज्जयेताम् ॥ २१ ॥

नात्यायतं रुचिरकम्बुविलासयौर्यं
 भूषाभरेण विविधेन विराजमानम् ।
 कण्ठं मनोहरगुणं गिरिराजकन्ये
 सञ्चिन्त्य तृप्तिभुपयामि कदापि नाहम् ॥ २२ ॥

अत्यायताक्षमभिजातललाटपट्टं
 मन्दस्मितेन दरकुल्लकपोलरेभम् ।
 भिम्भाधरं भलु समुन्नतदीर्घनासं
 यत्ते स्मरत्यसकृदम्भ स अवे जातः ॥ २३ ॥

आविस्त्वयारकरलेभमनल्पगन्ध-
 पुष्पोपरि भ्रमदविग्रजनिर्विशेषम् ।
 यश्चेतसा कलयते तव केशपाशं
 तस्य स्वयं गलति देवि पुराणपाशः ॥ २४ ॥

श्रुतिसुरचितपाकं धीमतां स्तोत्रमेतत्
 पठति य षुड मर्त्यो नित्यमार्द्ध्रान्तरात्मा ।
 स भवति पद्ममुख्यैस्सम्पदां पादनम्र-
 क्षितिपमुकुटलक्ष्मीर्लक्ष्णानां चिराय ॥ २५ ॥

श्रुतिसुरचितपाकन्धीमतां स्तोत्रमेतत्
 पठति य षुड मर्त्यो नित्यमार्द्ध्रान्तरात्मा ।
 स भवति पद्ममुख्यैस्सम्पदाम्पादनम्र-
 क्षितिपमुकुटलक्ष्मीर्लक्ष्णानाञ्चिराय ॥ २६ ॥

इति श्रीभुवनेश्वरीस्तोत्रं समाप्तम् ॥

छिन्दी रुपान्तर -

श्री भुवनेश्वरी-स्तवः

डे माँ । आप श्री विश्वाद्या डो, अभिल अल्लमाण्ड की जननी डो, अल्लमाँ,
 विष्णु, शिव की माता तथा अभिल विश्व डो सृष्ट करनेवाली,

पोषण देनेवाली तथा लय करनेवाली हो । आप श्री के स्तवन से मेरी
वाक्य-रचना वाणी पवित्र हो ॥ १ ॥

हे माँ, पार्वति! पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, यजमान,
सोम तथा सूर्य में जो मछा-शिव व्यापक हैं तथा जो मदन को दहन
करनेवाले हैं, उन मछाप्रभु शिव की भी त्रैलोक्य-सत्कार-शक्ति
आपसे ही उत्पन्न हुई है ॥ २ ॥

हे माँ! आप श्री की पवित्र चरण-से पवित्र हुई शिव के शिर की जटा
में तीन स्रोतवाली त्रिधार श्री भागीरथी गङ्गा विश्व-पूज्या हैं
तथा इसी कारण उनका प्राधान्य है ॥ ३ ॥

हे माँ, हे विश्व-जननि! चन्द्र से एकमात्र कुमुदिनी ही झिलती है ।
सूर्य से एकमात्र कमल का ही आनन्द बढ़ता है, अन्य का नहीं । इस
प्रकार एक-एक वस्तु के सुभार्थ एक-एक पदार्थ ही निर्दिष्ट हुआ
है परन्तु आप श्री तो सारे विश्व को श्री-दृष्टि से आनन्द देनेवाली
हो ॥ ४ ॥

हे माँ! विश्व में आप श्री सर्वादि-भूता छोकर भी निरन्तर नव-यौवना
रहती हो । आप श्री अत्यन्त कठिन पर्वत-राज की पुत्री होने पर भी
अत्यन्त सु-कोमला हो । वेद आदि सद्-ग्रन्थ आप श्री से उत्पन्न छोकर भी
आप श्री के अनन्त गुण-कथन में असमर्थ हैं । आप श्री ध्यानगम्य
छोकर भी किसी के मन में स्थिर नहीं होती हो ॥ ५ ॥

हे माँ! जो व्यक्ति दुर्लभ नर-जन्म में बुद्धि आदि दिव्य छन्दियों की
सहायता पाकर भी आपकी आराधना नहीं करते, वे मुक्ति की सीढ़ी पर
चढ़कर भी पुनः गिरते हैं ॥ ६ ॥

हे माँ, हे भवानी! जो व्यक्ति कर्पूर-चूर्ण विलोडित (मिले हुए) शीतल
जल से धर्षित (धिसे हुए) चन्दन तथा सुगन्ध-युक्त पुष्पों से
उत्सुक-चित्त से आप श्री की आराधना करते हैं, वे सर्व-भुवनों
के अधिपति होते हैं ॥ ७ ॥

हे माँ, हे जननि! आप श्री मूलाधार चक्र में सर्वाकारा श्री कुण्डलिनी
रूप से स्थित छोकर सारे विश्व को उत्पन्न करती हो तथा मूलाधार से
ऊर्ध्व में स्थित पदों को बिजली की रेखा के समान भेदकर सडस्यार-
स्थित परम शिव से सङ्ग करती हो (यह विद्युल्लता श्री कुण्डलिनी

अभ्यास से जागृत होती है) ॥ ८ ॥

हे मधेश्वर-कुटुम्बिनि है माँ! आप श्री सलस्यार-निर्गत
सुधा-पीयूष-रस से स्वदेह को स्नान कर सुषुम्ना-मार्ग में फिर
प्राप्त हो पुनः आधार-चक्र में विश्राम करती हो । जिस साधक
के हृत्कमल में आप श्री के इस रूप का भावोदय नहीं होता, वह
वारंवार (जन्म-मरणार्थि) गर्भवास भोगता है ॥ ९ ॥

हे माँ! आप श्री के लम्बे केश हैं । आप श्री का मुख अत्यन्त मनोहर
है । आप श्री पीन-स्तना हो । आप श्री की पतली कमर है तथा आप
श्री की चार भुजाओं में ज्ञानमुद्रा, जप-माला, कलश तथा पुस्तक
विराजमान है । है माँ! आप श्री की अैसी छटा को नमस्कार है ॥ १० ॥

हे माँ, हे विश्वेशि! योगि-जन योगाभ्यास से काम, क्रोध, मद,
लोभ, मत्सरार्थि को विजय कर इन्द्रिय-निरोध-द्वारा प्रकुल्लित चित्त
से प्राण-परा पाशांकुश-वराभय डायवाली आप श्री का दर्शन करते
हैं ॥ ११ ॥

हे माँ! प्रथम सुवर्ण वर्णवाली, चार डायियों द्वारा जल-पूरित
घटाभिषिक्ता, दो डायों में पद्म तथा दो डायों में वराभय-युक्ता
श्री मडा-लक्ष्मी आप ही हो ॥ १२ ॥

हे भा, हे भवानि! श्रीसिंह-वाडना नाना अस्त्र-धारिणी, अष्ट-भुजा,
दूर्वा-दल-द्युति, सुरासुर-विजया, श्रीदुर्गा-रूप-धारिणी आप ही
हो ॥ १३ ॥

हे माँ! प्ररवेद-भुन्-सुशोभित भुज-कमलवाली गुञ्जा-कृल-निर्मित
डार-यष्टी धारण किये डुये रत्नांशुका, रत्नवसना,
कृषण-कान्तियुता, श्रीअनङ्गवशी (काम को वशमें करनेवाली) आप
श्री का मैं सदा स्मरण करता हूँ ॥ १४ ॥

हे माँ, हे नील-कण्ठे! जिस प्रकार लंस नूपुर-ध्वनि से आकर्षित
होते हैं, उसी प्रकार वेद आप श्री के चरण-कमलो का अनुगमन
करते हैं । आप श्री के चरण-कमल उर्ध्व-भुज नील-कमल-वत्
प्रत्यन्त शोभा पा रहे हैं । मैं आपके उन्हीं दोनों चरण-कमलों
को अपने मस्तक पर धारण करता हूँ ॥ १५ ॥

हे माँ, हे भवानि! विश्वनाथ वृषभ-ध्वज श्रीमडा-शिवञ्चु धो
नेत्रों से आप श्री के दर्शन कर तृप्त न हुआये । अतः तीसरे नेत्र को
उत्पन्न कर गाढःानुराग-सहित आप श्री की जङ्घा का उन्डोने दर्शन किया ।
आप श्री की उन जङ्गाओं को प्रणाम है, वारम्बार प्रणाम है ॥ १६ ॥

हे माँ! आप श्री की गिरु हस्ति-शुण्ड-गर्व-ज्जर्वा हैं, स्थूलता, आर्द्रता
अेवं कोमलता में डेले के स्तम्भ को विजय करनेवाली है । आप श्री के
देह के मध्य देश का भाग चाप श्री के नितम्बों ने उरए कर लिया
हो, जैसे प्रतीत होता है अर्थात् मध्य देश ने ही स्तम्भ-रूप में
आप श्री के नितम्ब जङ्घादि निर्मित किये हों, ऐसा भासता है ॥ १७ ॥

हे माँ! आप श्री के मध्य देश से मानो आप श्री के नितम्ब, तथा
स्तन-माण्डल दोनों ने उच्यता तथा स्व-विस्तार के लिये सार पिय
लिया है । अतः आप श्री का मध्यदेश क्षीण हो गया है । आप श्री का
यह मध्य देश मेरे हृदय में स्फुरित हो ॥ १८ ॥

हे माँ, हे जननि! श्री भगवान् मडा-शिव के तृतीय नेत्राञ्चि से
भय को प्राप्त हुआये श्री मदन के रक्षार्थ श्रीमदन-प्रिया रति
ने स्व-लावाण्य-जल-भरित सरोवर-वत् आप श्री की नाभि का निर्माण
किया हो, ऐसा प्रतीत होता है । आप श्री की इस नाभि को मैं कभी न
भूलूँ ॥ १९ ॥

हे माँ, हे जननि! आप श्री के दोनों कुच-कमलों में भस्म लगी
हुई है । (इससे श्री भगवान् शिव ने आप श्री का आलिंगन किया हो,
ऐसा भासता है) तथा आप श्री के स्तन-युगल केसर-पद्म-मूलादि
से अनुलिप्त हैं । स्नान कर निकले हुआये मद्-युक्त छाथी के क्षण
मात्र हेन-लक्षित सिन्दूरवाले गाण्ड-स्थल के समान आप श्री के
कुच-युगल शोभा पा रहे हैं ॥ २० ॥

हे माँ! पार्श्व में उत्तम कान्ति-धारा-सम शोभती आप श्री की दोनो
भुजाओं इस प्रकार शोभा दे रही हैं, मानो श्री मदन ने अपने
शत्रु श्री शिव का कण्ठ-ग्रहण करने के लिये लम्बा पाश बनाया
हो । हे माँ! आप श्री की इन दोनो भुजाओ का मेरे चित्त में सदैव
स्मरण रहे ॥ २१ ॥

हे माँ, हे गिरिकन्ये! आप श्री की मनोहर कम्बु-त्रीवा को, जो अति दीर्घ

नडीं डै, जिसमें अनेक प्रकार के आभूषण विद्यमान हैं तथा जिसमें
अनेक मनोहर गुण भरे हुए हैं, स्मरण करता हुआ मेरा मन कभी
तुम न छो ॥ २२ ॥

डे माँ, डे विश्व-जननि! आप श्री के आकर्षण भिंये डुये अति दीर्घ
नेत्र हैं, परम मनोहर विशाल लाल डै, स्मित डस्य से कपोल
प्रकृतित दीप्तते हैं, भिम्बाङ्गल-वत् लाल अधर हैं, डठी डुङ्ग
दीर्घ नासिका डै । जो पुरुष आप श्री के दिव्य मुपपद्य का स्मरण
करते हैं, डन्डीं का जन्म सङ्गल हैं ॥ २३ ॥

डे डेवि, डे माँ! आप श्री के केशपाश लाल-चन्द्रिका से प्रकाशित डो
रडे हैं, स्वल्प-सुगन्धित डल गुञ्जित लभर-वत् डो रडे हैं
(रत्यन्ते) । जो आप श्री के केशों का डस प्रकार चिन्तन करता डै,
वड जगज्जाल से छूट जाता ॥ २४ ॥

आर्द्र-चित्त से स्तोत्र पाठ करने से सम्पत्ति का आधार बनता डै
तथा डसडे यरणों में राजपुरुष भी डुकते हैं ॥ २५ ॥

डति श्रीभुवनेश्वरीस्तवः सम्पूर्णः ।

Proofread by lalitha parameswari parameswari.lalitha at gmail.com,
Ganesh Kandu, PSA Easwaran

—
Shri Bhuvaneshwari Stotram

pdf was typeset on January 22, 2022

—

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

